B.A. Part-I Hons session 2019 -20
Girija uranw Depatt of PSY Paper IInd
R.M.C. Sasaram

व्यक्ति के मनोलैंगिक विकास की विभिन्न अवस्थाओं से अपना संक्षिप्त परिचय करायें ?

व्यक्ति का मनोलैंगिक विकास (Psycho sexual development of an individual)

लिंग का अर्थ :— लिंग का प्रयोग प्राय: तीन अर्थों मे किया जाता है (क) लिंग का प्रयोग जीवों की उन सभी विशेषताओं के लिए प्रयोग होता है जिसके आधार पर पुरूष स्त्री एवं नर मादा के बीच भेद स्थापित किया जाता है। (ख) लिंग का दूसरा अर्थ जननेन्द्रियों की प्रक्रियाओं तक सीमित होता है पहले अर्थ के अनुसार लिंग भेद सभी लोगों मे जन्म से ही रहता है पर, दूसरे अर्थ के अनुसार व्यक्ति कई बरस तक लिंग की प्रक्रियाओं के बिना भी जीता है। इस प्रकार इसका दूसरा अर्थ विशिष्ट तथा संकुचित है। इसे हम जननेन्द्रियाँ संबंधि कहें तो अनुचित न होगा। (ग) लिंग का तीसरा अर्थ है रागात्मक आकर्षण जिसे प्रेम लीला मे लोग अनुभव करते हैं। इसी के कारण हम एक-दूसरे की ओर खींचते हैं और सम्पर्क मे समय बीताना चाहते हैं या कोई जरूरी नहीं कि सम्पर्क शारीरिक ही हो। यह पुरूष-पुरूष, स्त्री-स्त्री या स्त्री-पुरूष किसी के बीच हो सकता है। मनोविज्ञान मे लिंग का प्रयोग प्राय: इस तीसरे अर्थ मे ही किया जाता है।

लिंग का महत्व :— असामान्य व्यवहार के विकास मे लिंग का महत्व जितना लोग लगाते हैं उससे कहीं अधिक है अत: जब तक इसका पूरा परिचय न प्राप्त कर लिया जाय तब तक बहुत सी असामान्यताएं समझ मे नहीं आती। इसका

Scanned with CamScanner

इसका एक कारण तो यह होता है कि लिंग संबंधि इच्छाएं काफी प्रबल होती है। इनके प्रभाव में आकर व्यक्ति अपना विचार शक्ति तथा विवेक तक खो देता है। फ्रायड के अनुसार मनुष्य का जीवन और व्यक्तित्व लिंग से ओत-प्रोत है और जीवन का ढाँचा लिंग पर निर्भर करता है। प्रचलित धारणा यह है कि लिंग का आविर्भाव युवावस्था में होता है लेकिन फ्रायड के अनुसार इसका कार्य बच्चे के स्तनपान से ही प्रारम्भ होता है। फ्रायड ने लिंग का प्रयोग विस्तृत अर्थ में किया है। वास्तव में व्यक्तित्व विकास एवं जीवन-निर्माण में लिंग का महत्व एवं प्रभाव दिखाने का श्रेय सर्वप्रथम फ्रायड को ही मिला। 1909 ई० में उन्होंने मनोलैंगिक विकास एवं इसको विकृत होने की सम्भावनाओं पर जो भाषण दिया वह असामान्य मनोविज्ञान के लिए एक महत्वपूर्ण घटना थी। हर युग एवं समाज में लिंग और काम इच्छा की तृप्ति के लिए इतने प्रकार के निषेधात्मक प्रतिबन्ध है कि मनोविकारों और असामान्यताओं का आविर्भाव एवं विकास संभव है एवं स्वाभाविक है दमन एक साधारण एवं सामान्य प्रक्रिया है। जब दमित इच्छा काम इच्छा की तरह प्रबल हो तो उससे हर तरह की विकृतियाँ एवं दोष पैदा हो सकती है।

Scanned with CamScanner